9

गरीबी

द ाकों तक भारत में 'अर्थ ाास्त्र' का तात्पर्य गरीबी का अध्ययन रहा है। कुछ समय पहले तक कॉलेज में अर्थ ाास्त्र पढ़ाने की भाुरुआत ''गरीबी के दो ापूर्ण चक्र'' नामक सिद्धान्त (Theory of vicious circle of poverty) से की जाती थी। इस सिद्धान्त के अनुसार गरीबी को दूर नहीं किया जा सकता। गरीब लोग तथा गरीब राश्ट्र के लिए गरीब रहना नियति है। वास्तव में यह कोरी बकवास है। यदि यह सत्य होता तो संसार आज भी पाशाण युग में होता। जीवनियों (biography) का इतिहास 'गरीबी से अमीरी का सफर करने वाली कथाओं से भरा पड़ा है। हाँगकाँग और अमेरिका गरीब आप्रवासियों (immigrants) द्वारा ही बनाये गये। गरीब लोग कठोर परिश्रम करते हैं और अक्सर सफल होते हैं। अमीर लोग आलसी हो जाते हैं और विलासिता में फँस जाते हैं । यह गरीबी के कुचक्र नामक सिद्धान्त अब आई.सी.एस.ई. एवं सी.बी. एस.ई. बोर्ड के स्कूलों में पढ़ाया जाता है। ऐसी किताबों को, जिनमें ऐसे बकवास सिद्धान्त दिये गए हैं, तुरन्त हटा देना चाहिए।

अर्थशास्त्र गरीबी का अध्ययन नहीं है वरन् यह धन पैदा करने का अध्ययन है।

सन् 1776 में एडम स्मिथ ने ''एन इनक्वाइरी इन टू द नेचर

एण्ड कॉजेज ऑफ द वेल्थ ऑफ नेशन्स'' नामक पुस्तक लिखी। **एडम स्मिथ** ने धन के कारणों का अध्ययन किया और मुक्त बाज़ार के अनुयायी भी इसी का अध्ययन करते हैं।

भारत को गरीब दे ा कहा जाता है तथा गरीबी की समस्या को हल करने के लिए राजनैतिक कार्यवाही की बात की जाती है। गरीबी उन्मूलन के लिए नेताओं द्वारा करोंड़ों रूपया खर्च करने के बाद भी गरीबी समाप्त नहीं हो रही है। तो क्या नेताओं द्वारा की गयी इन कार्यवाहियों एवं खर्चों को जारी रहना चाहिए? आइये हम अपने आस–पास दिखाई देने वाले गरीबी के लक्षणों (जैसे–भिखारी) पर नजर डालते हैं और उनकी स्थिति को थोड़ा पास से जानने की कोि ा ा करते हैं।

कभी आप दिल्ली एवं देहरादून के बीच बस या कार से यात्रा करें तो पाएंगे कि रुड़की से आगे सड़क एक घने जंगल से गुजरती है। सड़क के इस टुकड़े में सड़क के दोनों तरफ हजारों बंदर इकट्ठा रहते हैं और उन हनुमान भक्तों का इन्तजार करते रहते हैं, जो उन्हें खाना खिलायें। लेकिन क्या इससे सिद्ध होता है कि जंगल निर्धन एवं संसाधन रहित है?

या यह प्रेरकों (incentives) की भूमिका को प्रदि ात करता है? (इन्सेन्टिव – जिसे मनोवैज्ञानिक धनात्मक पुनर्बलन भी कहते हैं)। दरअसल बंदर यह सीख चुके हैं कि सड़क के आस–पास इकट्ठा रहकर भोजन प्राप्त करना, जीवित रहने का (अस्तित्व में बने रहने का) आसान तरीका है और यही बात भिखारियों के सन्दर्भ में भी सत्य है।

बहुत पहले **लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स एण्ड पॉलिटिकल साइन्स** के विकास अर्थ ाास्त्री ने तथ्यों की छानबीन कर, निश्कर्श निकाला कि भारत एवं पाकिस्तान के भाहरों एवं कस्बों में फैली हुई भिखारियों की संख्या, गरीबी का सूचक नहीं है, बल्कि यह दोनों ही दे ाों में पूर्व प्रधान (Pre-dominant) सम्प्रदायों का परिणाम है। हिन्दू एवं मुसलमान दोनों ही सोचते हैं कि गरीब को भिक्षा देने से वे पुण्य कमायेंगे। इन दे ाों में पारसी, जैन और सिख भिखारी नहीं मिलते क्योंकि ये सम्प्रदाय पुण्य कमाने के अन्य तरीकों में वि वास करते हैं तथा अपनी मदद स्वयं करने को प्रोत्साहित करते हैं।

भारत में बच्चों को अंग–भंग करके भिक्षावृत्ति में धकेलने के विरोध में कानून है। इस प्रकारके कानून का अस्तित्व, इस हेय (घटिया) व्यवस्था /कृत्य की उपस्थिति को सिद्ध करता है।

इस घटिया कृत्य की उपस्थिति के कारण ही अधिकाँ ा भिखारी भयानक रूप से अपंग हैं। निगम और पुलिस के अधिकारियों की छोटी–मोटी चोरी की आदत, भिक्षावृत्ति के इस कृत्य को बढ़िया कमाई के साधन के रूप में देखती है।

'भिक्षावृत्ति एक व्यवसाय है और यह सिर्फ एक बात सिद्ध करता है कि हमें ''दान'' या ''भिक्षा'' देने के स्वरूप के बारे में फिर से सोचना चाहिए। हमें भिखारियों को भीख देने की बजाय प्रतियोगी निजी सहायता समूहों (private charities) को प्रोत्साहन देना चाहिए।

इसलिए चोरों (नेताओं) को कर से प्राप्त धन को गरीबों की मदद के नाम पर खर्च करने की अनुमति देने का कोई कारण नहीं है। परस्पर प्रतियोगी निजी सहायता समूह ही एकमात्र सर्वोत्तम उपाय है।

> स्वावलम्बन या स्व–सहायता (self-help) एक नैतिक सिद्धान्त है, जिसका मानना है कि बाहर से ली गई मदद, व्यक्ति को कमजोर बनाती है। बाह्य मदद केवल अत्यधिक मजबूरी की स्थिति में लेनी चाहिए और वह भी निजी मददकर्ताओं (सहायता समूहों) या दोस्तों व परिवार से।

यदि आप वास्तव में उपयोगी तरीके से गरीबों की मदद करना चाहते हैं तो अपने धन को कैसे खर्च करेंगे –

- समाजवादी राज्य को कर अदा करके ?
- या गली नुक्कड़ के प्रत्येक भिखारी को भीख देकर ?
- या गरीबों की सहायता के लिए बनी ''मदर टेरेसा मि ानरी'' में अपना सहयोग देकर ?

स्वावलम्बन (Self-help)

ध्यान रहे कि भारत में कोई सिख या पारसी भिखारी नहीं है। सिख स्वावलम्बन (Self-help) का पालन करते हैं एवं इसे प्रोत्साहित करते हैं। गुरुद्वारे के लंगर में निः ुल्क भोजन प्राप्त करने वालों को स्वयं बाहर जाकर, कार्य करके, अपनी जीविका प्राप्त करके, अन्य किसी दिन, दूसरों के लिए लंगर में सहयोग करने हेतु प्रेरित किया जाता है।

सैमुअल स्माईल्स द्वारा लिखी पुस्तक **सेल्फ–हेल्प** (self-help)[7] को

[7] इस पुस्तक का भारतीय संस्करण ''लिबर्टी इंस्टीट्यूट नई दिल्ली'' में मौजूद है।

प्रत्येक भारतीय को पढ़ना चाहिए। 1860 में लिखी इस पुस्तक का कुछ ही वर्शो में तुर्की, अरबी, एवं जापानी आदि भाशाओं में अनुवाद किया गया तथा इसकी लाखों प्रतियाँ वि वभर में बिकीं। यह विक्टोरिया इंग्लैण्ड के प्रत्येक घर में बाइबिल के बाद दूसरे नम्बर पर सबसे ज्यादा पाई जाने वाली पुस्तक थी और इस पुस्तक ने जापानियों में यह दृढ़ वि वास पैदा किया कि यदि वे न्यूनतम सरकारी हस्तक्षेप के साथ, कर्तव्यनिशठ होकर कठोर परिश्रम करें तो जापान भोश संसार के साथ बराबरी में खड़ा हो सकता है।

यह पुस्तक व्यक्ति के स्वयं में वि वास करने को बढ़ावा देती है। जो व्यक्ति स्वयं में वि वास रखता है, केवल वही व्यक्ति स्वालम्बन का अनुपालन करता है और स्वयं की मानवीय क्षमताओं का अधिकतम दोहन करने का प्रयास करता है। कल्याणकारी राज्य की धारणा इस विचारधारा को प्रोत्साहित नहीं करती है बल्कि यह गरीब को ऐसे असहाय के रूप में देखती है जिसे सरकार से भिक्षा की आव यकता है। भारत के पूर्व प्रधानमंत्री **स्व. श्री राजीव गांधी ने स्वयं कहा था** – कि **गरीबी उन्मूलन** योजनाओं पर खर्च किये जाने वाले धन का 80 प्रति ात अपने लक्ष्य तक नहीं पहुँचता है। यह बीच में ही चोरतंत्र (Kleptocracy) द्वारा निगल लिया जाता है।

स्वावलम्बन (Self-help) एक नैतिक सिद्धान्त है, जिसके अनुसार बाहर से ली जाने वाली सहायता व्यक्ति को कमजोर बनाती है। केवल बहुत आव यक होने पर ही बाहर से मदद ली जानी चाहिए और वह भी निजी सहायता समूहों या मित्रों व परिवार से। हम सभी में सहानुभूति का नैतिक भाव तथा उदारता का सद्‌गुण (virtue of generosity) होता है। इसीलिए किसी को भी परे ानी में देखकर हम सभी को सहानुभूति होती है और हम उदारभाव से दान देने के इच्छुक हो जाते हैं। यही कारण है कि भिखारियों की संख्या बढ़ती जा रही है। ये जनता की सहानुभूति एवं उदारता (generosity) के जीवंत एवं दिनों–दिन वृद्धि कर रहे सबूत (testament) हैं। इनका अस्तित्व यह सिद्ध करता है कि गरीबों की मदद के लिए सरकार के विभिन्न करों की अपेक्षा सुसंगठित एवं सुनिर्दे ात निजी सहायता समूह बेहतर उपाय हैं। तथा गैर संगठित तरीके से व्यक्तिगत रूप से भिक्षा देकर भिक्षावृत्ति को बढ़ाने की अपेक्षा भी ये सहायता समूह कहीं बेहतर हैं। मुक्त बाज़ार अर्थव्यवस्था में गरीबों की मदद के लिए सरकार के योगदान की कोई आव यकता नहीं है।

इसके बजाय इस विचार के प्रचार–प्रसार की आव यकता है कि सम्पन्नता आर्थिक स्वतन्त्रता (economic freedom) से आती है। आज

बाज़ार अर्थव्यवस्था की छोटी से छोटी व्यवस्था (व्यक्ति या इकाई) भी आर्थिक नियंत्रणों के अधीन है तथा अफसर ाही की ि ाकार है। परिवहन उद्योग भी स्वतन्त्र नहीं है। विनिमय नियंत्रण प्रत्येक भारतीय को भूमंडलीकृत वि व अर्थव्यवस्था में मुक्त रूप से भाग लेने में अक्षम बनाता है। भारतीय कृशि भी अत्यधिक सरकारी प्रतिबन्धों की ि ाकार है।

यदि ये सभी नियंत्रण समाप्त कर आर्थिक स्वतन्त्रता प्रदान की जाए तो दे ा ज्यादा तेजी से सम्पन्न होगा। केवल बहुत थोड़े से लोग गरीब होंगे, जिनकी मदद प्रतियोगी निजी सहायता समूहों द्वारा की जा सकेगी। भिक्षावृत्ति को समाज द्वारा ही हतोत्साहित किया जायेगा। सरकार हमसे कम से कम कर लेगी तथा धन को सर्वोत्तम सार्वजनिक सम्पत्तियों वि ोश कर सड़कों व कानून –व्यवस्था में निवे ा करेगी। ये सब बातें दे ा को *400 सिंगापुर दृश्टिकोण* के अनुरूप भीघ्रता से भाहरीकरण की ओर अग्रसर करेंगी। ग्रामीण अधिकाधिक मात्रा में भाहर में जाकर बड़े स्तर के श्रम विभाजन में भाग लेंगे। इस तरह जमीन वि ोश पर ज्यादा जनसंख्या का दबाव नहीं होगा तथा भारतीय कृशि ज्यादा सक्षम हो सकेगी। भूमि के पुनर्निर्माण तथा पुनर्वितरण की आव यकता नहीं रहेगी। सरकार को सिर्फ सम्पत्ति के अधिकारों की ऱक्षा पर ध्यान रखना होगा।

हमें लोगों को स्वतन्त्रता पूर्वक धन पैदा करने के लिए प्रोत्साहित कर, स्वावलम्बन के नैतिक सिद्धान्त को बढ़ावा देना चाहिए। आज हम सिर्फ निर्भरता को प्रोत्साहित कर रहे हैं जो कि भारतीयों की क्षमतानुरूप भारत के पूर्ण विकास में बाधक है। यही निर्भरता चोरतंत्र (तथाकथित लोकतन्त्र) को गरीबों की नीतियों के सन्दर्भ में उपदे ा देने का मौका देती है जबकि ये नीतियाँ कभी भी अर्थपूर्ण तरीके से गरीबों की सहायता नहीं कर सकतीं। ऐसी सभी नीतियों को समाप्त किया जाना चाहिए। रा ान की दुकानों व छूटों की बजाय मुक्त व्यापार, स ाक्त मुद्रा (sound money), सार्वजनिक सम्पत्ति, कानून–व्यवस्था व पूर्ण आर्थिक स्वतन्त्रता होनी चाहिए।

स्वतन्त्रता, लोगों को बिना रुकावट के आर्थिक उपलब्धियों को प्राप्त करने के योग्य बनाती है। हमें स्वावलम्बन (self-help) के नैतिक सिद्धान्त की आव यकता है। ''मैं अपनी मद्द स्वयं करता हूँ तथा मैं ऐसा करने के लिए स्वतन्त्र हूँ। ''मैं दूसरों पर निर्भर नहीं हूँ, और वि ोशकर सरकार पर तो बिल्कुल नहीं'' – यदि प्रत्येक भारतीय ऐसा सोचे और आर्थिक रूप से स्वतन्त्र हो, तो कहीं गरीबी नहीं रहेगी।

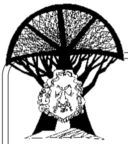

ज़रा सोचिये

- ❖ यदि ''गरीबी के कुचक्र'' (vicious circle of poverty) नामक सिद्धान्त असत्य है तो भारत की आम गरीबी से क्या पता चलता है?
- ❖ भारत एक सम्पन्न राष्ट्र कैसे बन सकता है?
- ❖ हम गरीबों की मदद सार्थक तरीके से कैसे कर सकते हैं?
- ❖ यदि सभी ज़रूरतमंद लोगों को सरकार से अनुदान (dole) प्राप्त हो तो यह व्यवस्था परिवारों को मजबूत करेगी या कमजोर करेगी? जरा गहराई से सोचिए कि यदि हम सभी को सरकार से अनुदान (dole) प्राप्त हो, तो क्या हमें परिवार व मित्रों की आव   यकता होगी?